# रस

प्रस्तुतकर्ता:- मनीष कुमार बसवाला
(हिंदी स्नातकोत्तर शिक्षक )
केन्द्रीय विद्यालय ग्वालपाड़ा

# रस

- किसी साहित्य अथवा काव्य को पढने पर चित में उत्पन्न होने वाले लोकोत्तर आनंद को रस कहते है |
- रस सिद्धांत का प्रतिपादन **आचार्य भरतमुनि** ने **नाट्यशास्त्र** नामक अपने ग्रन्थ में किया |
- जिनका समय विक्रम पूर्व द्वितीय शताब्दी था |
- इन्होनें रस सिद्धांत को सूत्रबद्ध करते हुए लिखा –

**विभावानुभावव्याभिचारी संयोगात रसनिष्पति :**

- अर्थात **विभाव**,**अनुभाव** तथा **व्यभिचारी** भाव के संयोग से रस की निष्पति होती है|
- "आलंबन विभाव से उद्बुद,उद्दीप्त,व्यभिचारी भावों से परिपुष्ट तथा अनुभावों द्वारा व्यक्त सहृदय के हृदय में वासना रूप में स्थित भाव ही रस दशा है |"-----मम्मट

..

भरत के उपर्युक्त सूत्र की अलग-अलग आचार्यों ने अपनी प्रतिष्ठा,संस्कार के आधार पर अलग-अलग व्याख्या की है |

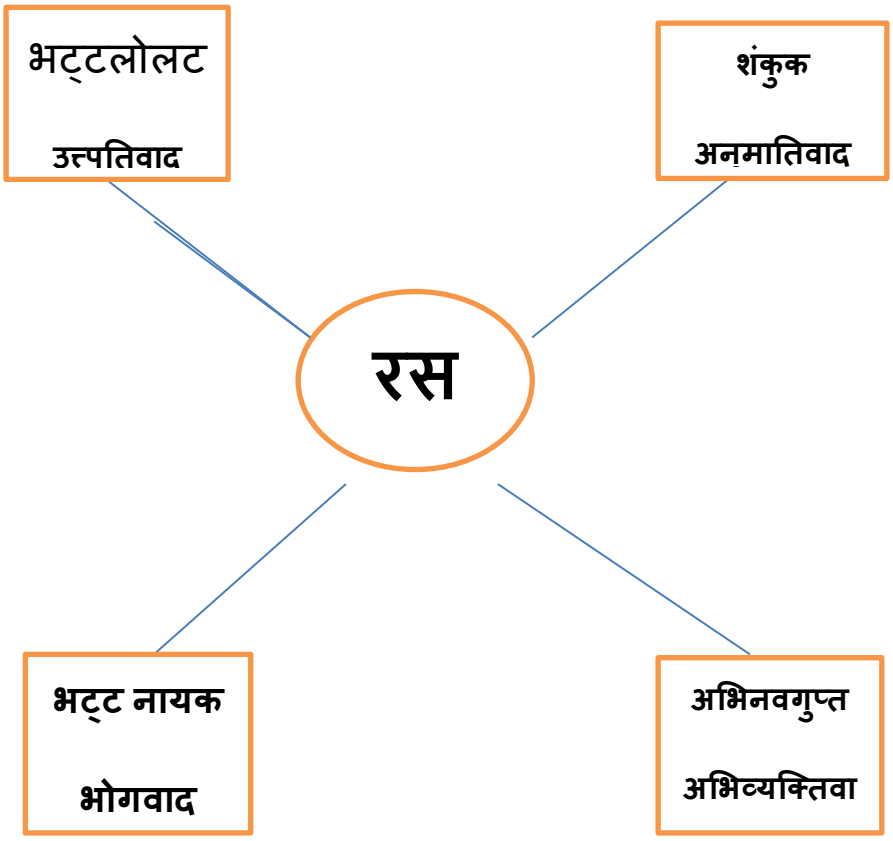


❖**रस का स्वरूप :-**

**सत्वोद्रेकाद्खंड स्वप्रकाशानंद चिन्मय**

**वेद्यांतर स्पर्श शून्यो ब्रह्मस्वाद सहोदर:**

**लोकोत्तर चमत्कार प्राण:कैश्चिद प्रमातृभि:**

**स्वाकारवद भिन्नत्वे नाSमा स्वाध्यते रस:**

**-----पं.विश्वनाथ**

## ❖रस के प्रमुख अंग

विभावानुभावव्याभिचारि संयोगात रसनिष्पति :

१. विभाव

२. अनुभाव

३. व्याभिचारि

४. स्थायी भाव

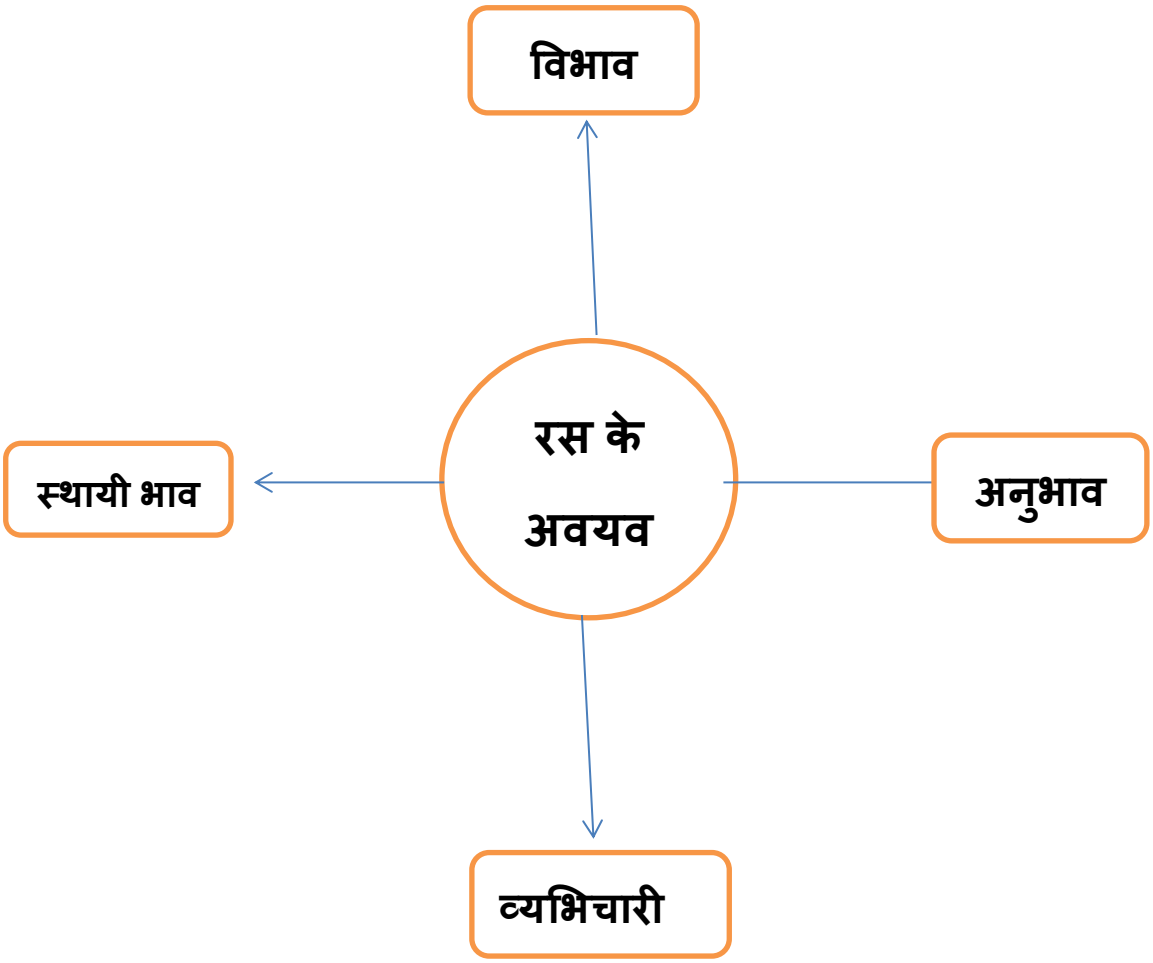

# रस-निरूपण

- हिंदी के रीतिकालीन आचार्यों नें रस को विशेष महत्त्व दिया |
- रस में भी उनका ध्यान विशेष रूप से 'श्रृंगार रस' पर केन्द्रित रहा

वस्तुत: काव्य को पढ़कर या सुनकर और नाटक को देखकर सहृदय श्रोता,पाठक या सामाजिक के चित्त में जो लोकोत्तर आनंद उत्पन्न होता है,वही रस है | इस 'रस' की 'निष्पति'के लिए भरतमुनि ने जो सूत्र दिया है वह इस प्रकार है-

**"विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगात रसनिष्पति :"**

अर्थात 'विभाव', 'अनुभाव'और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पति होती |

**विभाव:-** विभाव का अर्थ होता है रसानुभूति के कारण |
सहृदय के हृदय में स्थित स्थायी भावों को आस्वादन योग्य बनाने वाले उपादानों को विभाव कहते है | ये दो प्रकार के होते है-

(अ) आलम्बन

(आ) उद्दीपन

(अ) **आलम्बन:-**

जिसका आलम्बन कर के रसानुभूति होती है|सहृदय में वासना या संस्कार रूप में मूलत: स्थित भावों को उद्घोषित (जागृत) करने वाले कारण 'विभाव' कहलाता है | अर्थात जिसके प्रति किसी के चित्त में भाव विशेष जागृत होता है वह उस भाव का आलम्बन होता है |

आलम्बन के दो पक्ष होते हैं :-

1. विषय
2. आश्रय

**1.विषय :-** जिसके प्रति भाव विशेष जागृत होता है वह उस भाव का विषय होता है |

**उदाहरण :-** कण्व के आश्रम में शकुन्तला को देखकर दुष्यंत के मन में 'रति' भाव उत्पन्न हुआ |

यहाँ शकुन्तला 'रति' भाव की विषय हुई |

**2.आश्रय:-**

जिसके हृदय में भाव जागृत होता है,वह आश्रय कहलाता है|

यहाँ उदाहरण में दुष्यंत आश्रय है |

- पाठकों के लिए दुष्यंत एवं शकुंतला दोनों ही आलम्बन है एवं पाठक आश्रय है |

**(आ) उद्दीपन:-**

रति आदि मनोविकार को जो अतिशय उद्दीप्त करते है,उन्हें 'उद्दीपन विभाव' कहते है | जैसे- श्रृंगार रस में सुंदर वेशभूषा आदि,शीतल-शांत समीर, एकांत स्थान,उपवन,चांदनी,नायिका की भ्रू-सञ्चालन सम्बन्धी चेष्टाएँ आदि |

**उदाहरण:-** उपरोक्त उदाहरण के आधार पर आश्रम का नैसर्गिक सौन्दर्य और शकुन्तला की लालित्यपूर्ण चेष्टाएँ भी 'रति' भाव को जागृत क रनें में सहायक है,अर्थात ये रति को उद्दीप्त करते है | इसलिए इन्हें उद्दीपन विभाव भी कहते है | परिवेश और आलम्बन की चेष्टाएँ दोनों मिलकर उद्दीपन का कार्य करते है |

**अनुभाव :-**

भाव उत्पन्न होने के बाद भावों के अनुसार 'आश्रय' में कुछ शारीरिक चेष्टाएँ होती है | इन चेष्टाओं से भाव का अनुभव होता है |

इन शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते है |

उदाहरण के लिए –

'रति' भाव के उत्पन्न होने पर

कटाक्ष,रोमांच,आलम्बन को देखना,आलिंगन आदि चेष्टाएँ होती है | इन्हें 'रति'भाव का अनुभाव कहा जाता है |

<u>अनुभाव दो प्रकार के होते है –</u>

१. सात्विक

२. कायिक

<u>सात्विक-</u> सात्विक अनुभाव वे है ,जो सहज भाव से (बिना प्रयत्न के)_ उत्पन्न होते हैं ,इनकी संख्या 8 मानी गयी है |

१. स्तम्भ- जड़वत हो जाना

२. स्वेद- शरीर से पसीने छूट जाना

३. रोमांच- रोंगटे खड़े हो जाना

४. स्वरभंग-स्वर का फट जाना

५. वेपथु-शरीर का कांपना

६. वैवर्ण्य-मुख का रंग बदल जाना

७. अश्रु –आंसू बहना

८. प्रलय-अचेत हो जाना

<u>कायिक अनुभाव –</u> कायिक अनुभाव वे है जिन्हें प्रयासपूर्वक प्रकट किया जाता है | जैसे भ्रू विक्षेप,इंगित उच्छ्वास,कटाक्ष आदि |

**<u>व्यभिचारी /संचारी भाव -</u>** जो रसों में नाना –रूपों में विचरण करते है और रसों को पुष्ट करके अस्वादन योग्य बनाते है ,उन्हें व्याभिचारी या संचारी भाव कहते है |इनकी संख्या 33 मानी गयी है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हर्ष | विषाद | त्रास (डर) | लज्जा | ग्लानि | चिंता | शंका |
| असूया (इर्ष्या) | अमर्ष (आवेश) | मोह | गर्व | औत्सुक्य | ऊग्रता | चपलता (चंचलता) |
| दैन्य | जड़ता (अचेतन) | आवेग | निर्वेद | धृति(धैर्य) | मति | विबोध (जाग्रति) |
| वितर्क (विरोधी विचार) | श्रम | आलस्य | निंद्रा | स्वप्न | स्मृति | मद |
| उन्माद (सनक) | अवहित्था (भावों को छिपाने की कोशिश ) | अपस्मार (अचिम्भित हो जाना) | व्याधि | मरण | | |

- विभाव,अनुभाव और संचारी भाव मिलकर स्थायी भाव को जाग्रत करते है जो रस के निमित होते है |

| क्र.सं. | स्थायी भाव | रस |
|---|---|---|
| १. | रति | श्रृंगार रस |
| २. | हास | हास्य रस |
| ३. | उत्साह | वीर रस |
| ४. | भय | भयानक रस |
| ५. | शोक | करुण रस |
| ६. | जुगुप्सा | वीभत्स रस |
| ७. | विस्मय | अद्‌भुत रस |
| ८. | क्रोध | रौद्र रस |
| ९. | निर्वेद | शांत रस |
| १०. | ईश्वरीय रति | भक्ति रस |
| ११. | रति | वात्सल्य रस |

## रसों का विवेचन

**श्रृंगार रस ;-**

# श्रृंगार रस दो प्रकार के होते है –

१. संयोग श्रृंगार

२. विप्रलंभ/वियोग

<u>संयोग श्रृंगार;-</u>

नायक-नायिका का एक दुसरे के प्रति प्रेम अथवा मिलन |

स्थायी-भाव = रति

आश्रय एवं आलम्बन = नायक एवं नायिका

उद्दीपन = बसंत,एकांत,केलि-कुञ्ज, उद्यान, सौन्दर्य और सामान वय आदि|

अनुभाव = अवलोकन, स्पर्श, आलिंगन,कटाक्ष,रोमांच,वैवर्ण्य |

संचारीभाव =मद,ग्लानि ,चपलता,निद्रा,उन्माद,हर्ष,मोह आदि |

उदाहरण :-

कहत,नटत,रीझत,खीझत,मिलत,खिलत,लजियात |

भरें भौन में करत है नैनन ही सों बात |

**अथवा**

**राम को रूप निहारती जानकी**

**कंकन के नग की परछाई |**

**याते सबै सुधि भूलि गई कर टेक रही,**

**पलकें टारत नाहीं**

<u>विप्रलंभ-श्रृंगार</u> –

जहाँ नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो |

भेद = पूर्वराग,मान,प्रवास,और करुण |

स्थायी-भाव = रति

आश्रय-आलम्बन = नायक-नायिका

उद्दीपन = बसंत,उद्यान,कोकिला,सखी,सूनी,शैया,कोयल की कूक |

अनुभाव =अश्रु,वैवर्ण्य |

संचारी-भाव =जड़ता,चिंता, ग्लानि,स्मृति आदि |

<u>उदाहरण =</u>

निसिदिन बरसत नयन हमारे,

सदा रहती पावस ऋतु हम पे जब तै स्याम सिधारे |

**अथवा**

*बिन गोपाल बैरिन भाई कुञ्ज*

*तब ये लता लगती अति सुन्दर*

*अब भई विषम ज्वाल की पुंज|*

***अथवा***

***मधुबन तुम रहत हरे***

***विरह वियोग स्याम के-सुंदर ठाड़े क्यों न झरे|***

**<u>हास्य रस</u> :-**

किसी पदार्थ या व्यक्ति की असाधारण आकृति,विचित्र वेशभूषा,अनोखी बातों, चेष्टाओं आदि से ह्रदय में जब विनोद,या हास का अनुभव होता है, तब हास्य रस की उत्पति होती है |

स्थायी-भाव = हास्

आलम्बन = भद्दा वेश,भद्दी आकृति |

उद्दीपन = विकृत चेष्टा ,विचित्र वेश भूषा |

अनुभाव = हंसना,मुंह खोलना,आँखों का मीचना आदि |

संचारी भाव-हर्ष,चपलता,और उत्सुकता |

उदाहरण :-

हंसो तो बच्चों जैसी हंसी

हंसो तो सच्चों जैसी हंसी

इतना हंसो की तर जाओ

हंसो और मर जाओ |

**<u>वीर रस :-</u>**

युद्ध अथवा किसी कठिन कार्य को करनें के लिए हृदय में निहित 'उत्साह' स्थायी भाव को जागृत होने पर उत्पन्न रस |

स्थायी-भाव = उत्साह

आलम्बन = शत्रु,प्रतिद्वन्द्वी, |

उद्दीपन = विपक्षी का उत्साह,ओजपूर्ण वचन,शत्रु की चेष्टाएँ ,सेना, रण-वाद्य |

**अनुभाव = गर्वयुक्त वाणी, दयापूर्ण-शब्द,भुजा का फड़कना,उत्साहपूर्ण वाणी |**

संचारी भाव = रोमांच,हर्ष,गर्व,औत्सुक्य |

<u>उदाहरण :-</u>

हिमाद्री तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती

अमृत्य वीर पुत्र हो दृढ प्रतिज्ञ सोच लो

प्रशस्त पुन्य पंथ है बढे चलो बढे चलो |

**अथवा**

सूर समर करहिं कही न जनावहि आपु

विद्यमान रन पाई रिपु कायर कथहि प्रतापु |

**अथवा**

चमक उठी सन सतावन में वो तलवार पुरानी थी

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी |

**<u>भयानक रस :-</u>**

भय अथवा डर उत्पन्न करनें वाली बातें सुनना अथवा व्यक्ति को देखने,सुनने अथवा उसकी कल्पना करने से मन में डर समा जाए |

स्थायी-भाव = भय

आलम्बन = अन्धकार,सिंह,सर्प,व्याघ्र,हिंसक प्राणी,श्मशान ,भूत-प्रेत . . की आशंका बलवान शत्रु,निर्जन स्थान आदि |

उद्दीपन = असहाय अवस्था,हिंसक जीव की चेष्टा, निर्जनता, . . . . विस्मयोत्पदक ध्वनि

अनुभाव = कम्प,स्वरभंग,भागना,वैवर्ण्य,स्वेद,आदि |

संचारी भाव = आवेग,चिंता,त्रास,अपस्मार,जुगुप्सा,ग्लानी,शंका,आदि |

उदाहरण :-

है अमानिशा उगलता गगन घन अन्धकार,

खो रहा दिशा का ज्ञान ,स्तब्ध है पवन चार |

**अथवा**

**एक ओर अजगर हिं लखि,एक और मृगराय**

**विकल बटोही बीच ही,पड्यो मूर्च्छा खाय**

**करुण रस :-**

जब प्रिय अथवा मनचाही वस्तु के नष्ट होने या कोई अनिष्ट होने पर हृदय में शोक भर जाए |

स्थायी-भाव = शोक

आलम्बन = अनिष्ट प्राप्ति,मृत व्यक्ति,बन्धुविनाश,किसी की दीन दशा |

उद्दीपन = दाहकर्म अथवा मृत व्यक्ति से सम्बन्धित घटनाएँ ,आदि |

अनुभाव = भाग्य-निंदा,उच्छ्वास,अश्रु,वैवर्ण्य, मूर्च्छा,स्तम्भ |

संचारी भाव = निर्वेद,मोह,व्याधि,चिंता,ग्लानी,जड़ता,विषाद |

उदाहरण :-

देखि सुदामा की दीन दशा

करुणा करिके करूणानिधि रोये |

पानी परात को हाथ छुयो नहीं

नैनन के जल सो पग धोये |

**अथवा**

दुःख ही जीवन की कथा रही

क्या कहूँ आज जो नहीं कही |

**अथवा**

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ हैं |

दुःख जल निधि में डूबी का सहारा कहाँ है |

**वीभत्स रसः-**

घृणित वस्तु,घृणित चीजों,या घृणित व्यक्ति को देखकर मन उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि ही वीभत्स रस की पुष्टि करती है |

स्थायी-भाव = जुगुप्सा (घृणा)

आलम्बन = घृणा को उत्पन्न करने वाली वस्तुएं और विचार, रुधिर . . आदि |

उद्दीपन = दुर्गन्ध,जलना, सड़ना, छटपटाना और विकृत रूप आदि |

अनुभाव = मुख मोड़ना,सांस रोकना,आँख-नाक बंद करना |

संचारी भाव = ग्लानि,आवेग,व्याधि,मूर्च्छा |

**उदाहरण :-**

सर पर बैठियो काग आँख दोउ खात निकारत

खींचत जिभही स्यार अतिहि आनन्द धारत |

**अथवा**

आँख निकल उड़ जाते,क्षण भर उड़ कर आ जाते |

शव जीभ खींचकर कोवे, चुबला-चुभला कर खाते

## रौद्र रस:-

जब किसी एक पक्ष या व्यक्ति द्वारा दुसरे पक्ष या का अपमान करने अथवा अपने गुरुजन आदि की निंदा से जो क्रोध उत्पन्न होता उसे रौद्र रस कहते है |

स्थायी-भाव = क्रोध

आलम्बन = विरोधी,शत्रु |

उद्दीपन = अपकार,अपमान विरोधियों के कठोर वचन,दुराचारी,देशद्रोही|

अनुभाव = चेहरा लाल होना,ललकारना,गर्जन, स्वेद,आवेग,कम्प,|

संचारी भाव = उग्रता,अमर्ष,असूया,मद,गर्व,आवेग |

**उदाहरण :-**

**श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे |**

**सब शील अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे |**

**अथवा**

**सुनहूँ राम जेहिं सिव धनु तोरा सहसबाहु सम सो रिपु मेरा**

**<u>अद्भुत रस :-</u>**

किसी असधारण,अलौकिक या आश्चर्यजनक वस्तु,दृश्य या घटना को देखने ,सुननें से जब आश्चर्य होता है,तब अद्भुत रस की उत्पति होती है |

स्थायी-भाव = विस्मय

आलम्बन = अलौकिक वस्तु,विचित्र दृश्य ||

उद्दीपन = आश्चर्यजनक वस्तुओं का दर्शन,श्रवण,या महिमा का वर्णन|

अनुभाव = स्तम्भित रह जाना,रोमांचित होना,गदगद होजाना |

संचारी भाव = वितर्क,भ्रान्ति,हर्ष,आवेग |

**उदाहरण :-**

**केसव कही न जाइ का कहीए |**

**देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहि मन रहिए |**

**अथवा**

देख यशोदा शिशु के मुख में सकल विश्व की माया

क्षण भर को वह बनी अचेतन ,हिल न सकी कोमल काया |

## <u>शांत रस:-</u>

इस रस में तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति अथवा संसार से वैराग्य होने पर परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होने पर मन को जो शान्ति मिलती है वहां शांत रस की उत्पति होती है |जहाँ न दुःख होता है,न द्वेष होता है मन सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है

स्थायी-भाव = निर्वेद (शम)

आलम्बन = संसार की असारता,परमतत्व का ज्ञान,आत्म-बोध . और मोक्ष आदि

उद्दीपन = सत्संग,तीर्थाटन,आध्यात्मिक चिंतन,धर्मोपदेश |

अनुभाव = रोमांच,वैराग्य,एकान्तप्रियता, |

संचारी भाव = हर्ष,स्मृति,धृति,निर्वेद,जड़ता |

**<u>उदाहरण:-</u>**

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोहे |

इक दिन ऐसा आएगा मई रौंदुंगी तोहे |

**अथवा**

**मानसरोवर सुभर जल,हंसा केलि कराहिं |**

**मुक्ताफल मुक्त चुगे अब उडी अनत न जाहिं |**

**अथवा**

*खा-खा कर कुछ पायेगा नहीं*

*न खाकर बनेगा अहंकारी*

*सम खा तभी होगा समभावी*

*खुलेगी सांकल बंद द्वार की*|

**भक्ति रस :-**

ईश्वर के प्रति भक्ति भावना |

स्थायी-भाव = ईश्वर विषयक प्रेम

आलम्बन = ईश्वर,राम और लक्ष्मण|

उद्दीपन = ईश्वर की अलौकिक शक्तियां,आद्वितीय गुण,भक्तों का सत्संग,मदिर

अनुभाव = नेत्रों का खिलना,वाणी का गदगद होना,रोमांचित होना

संचारी भाव = हर्ष, गर्व, निर्वेद, मति ,धृति,दैन्यं आदि |

**<u>उदाहरण :-</u>**

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई

जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई

साधुन संग बैठी-बैठी लोक लाज खोई

अब तो बात फ़ैल गयी जाने सब कोई |

**अथवा**

**रघुपति राघव राजा राम**

**पतित पावन सीता राम |**

**वात्सल्य रस :-**

इसका सम्बन्ध छोटे बालक-बालिकाओं के प्रति माता-पिता अथवा सगे – सम्बन्धियों का प्रेम एवं ममता के भाव से है |

स्थायी-भाव = बालक विषयक प्रेम

आलम्बन = बालक या शिशु |

उद्दीपन = बालक की चेष्टाएँ,खेलना-कूदना,पढ़ना-लिखना, आदि

अनुभाव = प्रसन्नता,पुलक,रोमांच |

संचारी भाव = हर्ष,चिंता,विषाद,मोह,|

**<u>उदाहरण :-</u>**

जसोदा हरी पालनै झुलावै

हलरावै,दुलरावै,मल्हावै,जोई सोई कुछ गावै |

**अथवा**

मैयां, कबहीं बढ़ेगी चोटी ?

किती बार मोहि दूध पियत भई,यह अजहूँ है छोटी |